अमेरिकी खुफिया हैकर ने दिल्ली के एक संस्थान में लिया था हैकिंग और जावा प्रोग्रामिंग का प्रशिक्षण

स्नोडेन का गुरु भारत

सुमन कुमार

अमेरिकी खुफिया एजेंसियों द्वारा पूरी दुनिया में की जा रही जासूसी का खुलासा कर चर्चित हुए अमेरिकी नागरिक एडवर्ड स्नोडेन ने हैकिंग और जावा प्रोग्रामिंग के कई गुर भारत में भी सीखे थे। इसके लिए उन्होंने दिल्ली में 2010 में एक सप्ताह का समय गुजारा था और यहां विदेशी नागरिकों को प्रशिक्षण देने वाले दुनिया के चुनिंदा संस्थानों में शुमार कोएनिग सॉल्यूशंस में प्रशिक्षण लिया था। कोएनिग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रोहित अग्रवाल के अनुसार स्नोडेन ने यहां नैतिक हैकिंग का प्रशिक्षण लिया था और तब कोई नहीं जानता था कि वह दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति के खुफिया तंत्र में सेंध लगाने की तैयारी में है। वैसे यह एक दिलचस्प संयोग है कि कंप्यूटर की दुनिया में वायरस और एंटी वायरस का इतिहास भारतीय उपमहाद्वीप से ही शुरू होता है। कहा जाता है कि पहला कंप्यूटर वायरस पाकिस्तान में बना था जबकि पहला एंटी वायरस भारत में। बहरहाल, बात अगर स्नोडेन की करें तो अग्रवाल का मानना है कि स्नोडेन ने जो किया उसे हैकिंग कहा जाए या नहीं, इसपर विवाद हो सकता है क्योंकि स्नोडेन खुद अमेरिकी रक्षा प्रतिष्ठान में काम करते थे और उनके लिए वहां के कंप्यूटर तक पहुंच बनाना आसान था जबकि हैकिंग का वर्तमान अर्थ यह लगाया जाता है कि बिना सीधी पहुंच हासिल हुए किसी अनजान शख्स के कंप्यूटर में सेंधमारी करना। इस अर्थ में स्नोडेन के कार्य को हैकिंग नहीं माना जा सकता।

कोएनिग के साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ संतोष कुमार के अनुसार बदलते समय के अनुसार कंप्यूटर की दुनिया भी तेजी से बदल रही है। निजी डाटा का दुरुपयोग कंपनियों द्वारा करने के मुद्दे से अलग दूसरों के कंप्यूटर में घुसकर डाटा चोरी के मामले भी तेजी से बढ़े हैं। अगर आप सतर्क नहीं हैं तो कभी भी आपके गोपनीय डाटा चोरी हो सकते हैं। प्रोफेशनल कंप्यूटर हैकरों ने डाटा चोरी करने के एक से बढ़कर एक तरीके ईजाद कर रखे हैं। इसमें सबसे पारंपरिक तरीका है ब्रूट फोर्स अटैक। इसमें किसी व्यक्ति के पासवर्ड को तलाशने के लिए तबतक संभावित शब्द तलाश किए जाते हैं जबतक कि सही पासवर्ड नहीं मिल जाता। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति अपने नाम और जन्मतिथि को मिलाकर पासवर्ड बनाता है तो ब्रूट फोर्स अटैक में एक सॉफ्टवेयर के जरिये सभी संभव शब्दों और अंकों का संयोजन बनाकर पासवर्ड के रूप में डाला जाता है। यह सॉफ्टवेयर हमारी सोच से भी तेज गति से शब्द संयोजन बनाता है। अगर आपने शब्दकोश के किसी भी शब्द को अपना पासवर्ड बनाया है तो सॉफ्टवेयर महज आधे घंटे में आपके पासवर्ड की तलाश कर लेगा। उनका कहना है कि पासवर्ड बनाते समय ऐसे शब्द का चयन करें जिसका कोई अर्थ न निकलता हो। इससे आपका पासवर्ड ज्यादा सुरक्षित रहेगा।

छाया: ए.एफ.पी.

दुनिया भर में हंगामा मचाने वाले अमेरिकी खुफिया हैकर एडवर्ड स्नोडेन

वैसे संतोष के अनुसार यह तो महज एक तरीका है। इसके अलावा भी कई तरीके हैं जिनके जरिये गोपनीय डाटा की चोरी की जा सकती है। अगर आपका कंप्यूटर किसी केबल के जरिये एक नेटवर्क से जुड़ा है तो एक ऐसा सेंसर केबल के पास रख दिया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में जा रहे डाटा से निकलने वाले चुंबकीय तरंगों को पकड़कर डाटा से संबंधित सारी जानकारी हैकर को दे देता है। इसके अलावा ई-मेल के जरिये वायरस प्रोग्राम भेजकर हैकिंग का तरीका तो आम चलन में है। किसी कंप्यूटर तक आपकी पहुंच हो तो उसके पीछे की-लॉगर नामक एक छोटा सा यंत्र लगा देने से उस कंप्यूटर के इस्तेमाल की सारी जानकारी इस यंत्र में आ जाती है। यह यंत्र बाजार में सरेआम मिलता भी है। यानी कंप्यूटर की सुरक्षा हर क्षण खतरे में होती है। वायरस से बचने के लिए आप एंटी वायरस का इस्तेमाल कर सकते हैं मगर अन्य तरीकों से बचने के लिए विशेषज्ञों की सलाह की जरूरत पड़ती है मगर भारत में इसे लेकर जागरूकता बेहद कम है।

रोहित अग्रवाल कहते हैं कि बड़ी कंपनियां भी अभी इसे लेकर उतनी जागरूक नहीं हैं बल्कि साइबर हमला होने पर ही विशेषज्ञों को याद करती हैं। रक्षा प्रतिष्ठानों और बैंकों में जरूर साइबर सुरक्षा पर ध्यान दिया जाता है। अग्रवाल कहते हैं कि भविष्य में यह कारोबार तेज गति पकड़ेगा मगर फिलहाल तो इसका पूरी क्षमता से दोहन नहीं हो पा रहा है। इसके बावजूद उनका मानना है कि साइबर सुरक्षा का कारोबार कई हजार करोड़ में पहुंच गया है। इसमें भी सबसे बड़ा हिस्सा अभी एंटी वायरस कंपनियों के पास ही है।

जब रोहित अग्रवाल से पूछा गया कि आखिर हैकिंग की शिक्षा दिए जाने के पीछे क्या सोच है तो उन्होंने कहा कि दरअसल कंप्यूटर की दुनिया में शातिर दिमाग लोगों की भरमार है और कुछ अच्छे लोग जो उनसे निबटना चाहते हैं उन्हें तकनीक की सही जानकारी नहीं होती। ऐसे लोगों के लिए ही नैतिक हैकिंग का प्रशिक्षण शुरू किया गया है। अमेरिका के रक्षा विभाग ने तो अपने कंप्यूटर विशेषज्ञों के लिए एथिकल हैकिंग के प्रशिक्षण को अनिवार्य कर दिया है। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि हैकिंग का प्रशिक्षण लेने के बाद कोई शख्स इसका क्या इस्तेमाल करता है इसकी निगरानी की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकती।